गुरुवाणी

कहते तो सभी है कि हम इस संस्था के भक्त हैं, हम इस संस्था के अनुयायी हैं हम इस संस्था के बहुत कुछ हैं लेकिन जब वक्त आता है, समय आता है तो सब टाय-टाय फिस्स हो जाता है। ***–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी***

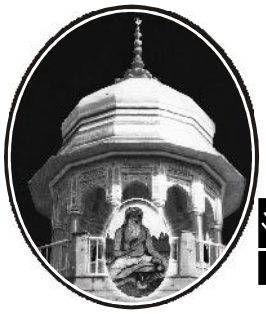

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरौः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़ दानी।।

वर्ष-१६, अंक ६, वाराणसी। गुरुवार ३१ मार्च २०१६ ई० सहयोग राशि ४.२५

समय

प्रकृति ने अपने सबसे उत्कृष्ट रचना मानव को जिस अमूल्य थाती से सुसम्पन्न बनाया है नवाजा है, वह है, समय। समय मानव जीवन यात्रा की अमूल्य, उत्कृष्ट, अलौकिक धरोर है, जिसके सदुपयोग एवं दुरुपयोग पर उसके जीवन-खजाना की सम्पदा निर्भर करती है। समय को काल, अवधि, क्षण वर्तमान चाहे जो भी कह लें पर प्रतिक्षण व्यतीत होता, अनवरत, अनन्त काल से चले आ रहा बेजुबान गतिमान समय के अधीन ही यह मानव जीवन है। माँ के गर्भ से लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्य समय के ही प्रभाव में अपने रूप, स्वरूप में परिवर्तन पाता है तथा अबोध अवस्था, बोध अवस्था, जवानी, बुढ़ापा, जरावस्था सभी अवस्थायें समय की ही देन है। कल अबरपति का आज खाकपति तथा कल के दरिद्र को अरबपति के रूप में ख्याति पाना समय का ही तकाजा है। साधारण बालक समय की गोद में परिष्कृत होकर असाधारण प्रतिभा से युक्त होकर समाज में अपनी प्रसिद्धि फैला देता है। समय और मानव का सम्बन्ध शरीर और प्राण सरीखा है, जिसने अपने जीवन में समय का कद्र किया है, पहचाना है, इसके महत्व को सर-आँखों पर रक्खा है या जिसके अभिभावक अपने पाल्य को समय नष्ट करते नहीं देखना चाहते, वे निरन्तर उनके जीवन में विकास के ईटें रखते चले जाते हैं तो एक दिन उनके पाल्य भव्य व्यक्तित्व के स्वामी बन जाते हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हुए भी विडम्बना यह है कि अधिकांश मनुष्य अपने इस असाधारण अमूल्य निर्धारित धरोहर को अनजाने में बेरहमी से विनष्ट करते चले जाते हैं तथा अन्त में सिर धुन धुन कर पछताते हुए अपनी इह लीला समाप्त कर जाते हैं। क्योंकि समय तथा उसके गर्भ से निकले अवसर कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते बलिक वे तो उन वायुवानों की तरह उड़ान भरते रहते हैं जिनके उड़ान का हर सेकेण्ड निर्धारित है। देर से आये हुए यात्रियों के लिए वे दिवास्वप्न सरीखे सिद्ध होते हैं इसीलिये पल-पल इस अमोघ निधि का इस्तेमाल करते रहना चाहिए एवं किसी अवसर को चूकना या समय का व्यर्थ गँवाना कभी प्रकृति द्वारा क्षम्य भी नहीं होता। समय एक ऐसा बलवान थाती है जिसका सम्मान करने हेतु हमें सदैव सतर्कता से उद्यत रहना चाहिए। समय अपने साथ स्वर्ण अवसर का उपहार लेकर प्रस्तुत होता रहता है परन्तु हम में से बिरले ही है जिन्हें उसकी पहचान होती है तथा स्वागत करने के लिये श्रमशीलता का पात्र बनकर आलिंगन हेतु तत्पर रहते हैं। समय का जो अंश व्यतीत हो जाता है वह अपनी प्रकृति के अनुसार आज तक लौट कर नहीं आया, इन्हीं क्षणों में से बनकर सिकन्दर महान, महान अशोक एवं जूलियस सिजर, नेपोलियन आदि ने समय की सार्थकता को सिद्ध किया है। साथ ही समय एवं काल के आगोश से आज तक कोई बच भी नहीं पाया। महर्षि, देवताओं तक को काल का ग्रास बनना पड़ा है। सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग आदि समय एवं काल की गणना युग, युगान्तर, कल्प, कल्पान्तरों के माध्यम से की जाती है। एक निर्धारित समयावधि के लिए ही प्रत्येक प्राणियों यहाँ तक पेड़-पौधे में भी श्वसन, प्रश्वसन, प्रकाश सदा लेखन आदि की क्रिया चलती रहती है।

सिद्ध संत की यह वाणी आज भी प्रासंगिक है कि ''आसपास योद्धा खड़े सभी बजावै गाल; माझ महल से ले चला करके काल काल'' यानी समयोपरान्त एक क्षण भी इस धरा पर जीव या प्राणधारी जीवित नहीं रह सकता। समय की अवधि किसी के लिये अपेक्षाकृत अल्प, किसी के लिये थोड़ी अधिक हो सकती है। इसीलिये इस मृत्युलोक में जीवन को समय का ही ध्यान रखते हुए क्षणभंगुर कहा गया है, क्षण का अर्थ यहाँ अत्यन्त शीघ्रता से बीतने वाला कालांश ही होता है। मनुष्य अपने अच्छे समय को अधिक अवधि तक व्यतीत करने के उपरान्त भी याद नहीं रखता। जबकि अल्पावधि तक ही सीमित भले हों, कष्ट को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक पीड़ा को हम भूलकर भी नहीं भूल सकते एवं कहा जाता है कि मौत का बुलावा कब कहाँ से किस प्रकार आ जाये इसका कोई भरोसा नहीं होता, इसीलिये तो टालने को खतरनाक प्रवृत्ति मानते हुए कबीरदास जी का यह कथन है **''काल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलय हो होयेगी बहुरि करेंगी कब?।।** यानी दूसरे पल का ठिकाना वह इस तरह इस विचित्र अनवरत धावक समय की गोद में समस्त जगत ही साँस ले रहा है। प्रतिदिन प्रातः, दोपहर, शाम, रात्रि का आगमन परिवर्तित समय की ही अवस्थाओं को चित्रित करता है। बोध अवस्था आने पर जो मानव इस अद्भुत समय के क्षणों का सदुपयोग, सतकर्मों में परमार्थ में परहित में, सर्वे भन्तु सुखिनस्त की भावना से करते रहते हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन में निराशा, कुंठा, अवसाद के प्रवेश की कत्तई गुजांइश नहीं होती। वे समाज के युगदृष्टा की भाँति सहज रूप से निर्भीकता का अवलम्बन लेकर अपनी साख बनाते हैं तथा सिंह की भाँति मस्त, निर्द्वन्द्व जीवन-यापन करते हैं।

समय के महत्व को जो मनुष्य ज्ञात नहीं कर पाते वे अन्ततः पछताते ही रह जाते हैं, क्योंकि जो अनजाने में या जानबूझकर समय को विनष्ट करता है, वह प्रत्यक्ष रूप से अपने आप को ही विनष्ट कर रहा होता है तथा उचित समय व अवसर पर कार्य न किया जाय, गाड़ी न पकड़ी जाय तो हमेशा के लिए ही हम चूक जाते हैं इसीलिये हर कार्य हेतु एक समय निर्धारित रहता है, जैसे परीक्षा का समय तीन घंटा या विशेष निर्धारित अवधि अथवा गाड़ी के छूटने का निर्धारित क्रम अथवा प्रतियोगिता परीक्षाओं में प्रतिभाग हेतु उम्र की एक अधिकतम सीमा जीवन का चाहे कोई भी क्षेत्र है, जिसने भी अपने जीवन में समय का सदुपयोग किया है। एक एक क्षण को संजोकर तत्परता से उसको उसको गले लगाया है वही मनुष्य, महान कहलाने का अधिकृत हुआ है। पाश्चात्य विद्वान फ्रैंकलिन का कथन है ''तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि जीवन इसी से बना है'' इससे भी महत्त्वपूर्ण यह है कि ईश्वर एक क्षण प्रदान करने के पूर्व ही दूसरा क्षण वापस ले लेता है जो फिर कभी भी हाथ नहीं आता। अस्तु, अपनी क्षमता को आँककर, पहचान कर समय रूपी बीज का अंकुरण अपने चाह रूपी खेत (हृदय) में धारण करके उसमें आशा की किरणों का संचार कर देने पर तो निश्चित ही फसल लहलहा उठेगी। अतः अपने मनोनुरूप लक्ष्य का निर्धारण कर पूर्ण मनस्विता से गन्तव्य की ओर निरन्तर अग्रसर होने में अवसर को कभी नहीं चूकना चाहिए। यह भी हमें सोचना चाहिए कि मृत्यु का आना अपरिहार्य रूप से सुनिश्चित है तथा वह कब आ जाये इसका कोई भरोसा नहीं। अतः जो वर्तमान काल चल रहा है। उसे ही सबसे अच्छा, सर्वोत्तम काल मानकर प्रतिदिन अपने जीवन के सुबह, दिन एवं रात को ईश्वर, प्रकृति

शेष पृष्ठ दो पर

शुभ नवरात्र

वर्ष भर में पारम्परिक रूप से सनातनी विधान के अनुरूप चैत्र नवरात्र यानी वासंतकि नवरात्र व शरद नवरात्र मनाया जाता है। शक्ति की अधिष्ठात्री सर्व ईश्वरी सर्वेश्वरी की ही उपासना दोनों नवरात्रों में शक्ति सम्वर्द्धन हेतु की जाती है। वासंतकि नवरात्र का प्रारम्भ हिन्दी नववर्ष के प्रथम दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, जो इस वर्ष ८ अप्रैल २०१६ से प्रारम्भ है। यानी विक्रम संवत् २०७३ का प्रारम्भ एवं कलियुग का ५११८वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। कहते हैं कि इसी दिन को ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। नवरात्र में विशिष्ट साधना, अनुष्ठान का महत्व है। जिसमें साधारण जन कष्ट सहन में ही प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप से उपवास, ब्रह्मचर्य, मौन, शीलधारण, चरित्र विकास के अतिरिक्त नशा मुक्ति एवं अनर्गल प्रलापों के समन हेतु ही ऋषियों द्वारा इस पद्धति से शक्तिस्वरूपा सर्वेश्वरी की उपासना का विधान किया गया है। प्रत्येक छः माह के अन्तराल पर शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि एवं बल-बुद्धि वृद्धि हेतु नवरात्र के प्रथम तिथि को विधानानुसार स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर शुभ संकल्प लेकर गंध, अक्षत, पुष्प, रोरी के साथ सर्वप्रथम प्रकृति यानी ब्रह्म का आवाहन कर पूजन प्रारम्भ करते हैं, फिर आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत से युक्त कर श्रद्धा के साथ नैवेद्य, पुष्पांजलि अर्पित कर मंत्रोच्चार के साथ शक्ति घट की स्थापना का विधान है। जिसमें प्राकृतिक रूप से गणपति एवं मातृका पूजन भी सम्पन्न हो जाता है। चैत्र नवरात्र में नवगौरी के रूप में तथा शरद नवरात्र में नवदुर्गा के रूप में माँ सर्वेश्वरी का ही आवाहन पूजा-पाठ, मंत्र-जप आदि के माध्यम से किया जाता है।

सन्तों द्वारा औघड़, अघोरेश्वर, खेपा, मलंग, परमहंस सभी रूपों के द्वारा शक्ति की ही अर्चना, अभ्यर्थना की जाती है। औघड़, अघोरेश्वर को साक्षात् शिव एवं शिव के पर्याय के रूप में देखा जाता है जिनका जगत् में प्रभाव शक्ति सानिध्य के ही कारण है अन्यथा शिव को शक्ति के अभाव में शव तुल्य हो जाते हैं। इसीलिये ''माँ सर्वेश्वरी त्वं पाहिमाम्'' का उच्चारण कर हम सब पूरे मनोयोग एवं आत्मभाव से शक्ति की उपासना को उद्यत होते हैं। इसलिये परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी के द्वारा जगहितार्थ प्रतिपादित अघोर वचन शास्त्र नामक ग्रन्थ का पहला अध्याय के शीर्षक का श्री गणेश ''माँ'' से किया गया है। इस प्रथम अध्याय के अन्तर्गत माँ के सभी रूपों को ऊर्जा के रूप में कण-कण में विराजमान कहा गया है। जिसे अपनाने हेतु पाने हेतु अनेक विधान का सहारा लेते हैं तथा अपने भावों को परिष्कृत कर जब आर्त्तभाव से जगद्जननी की पुकार करते हैं तो वे अनेकों रूप में होकर हमारी रक्षा करती हैं, वे हमारी उपासना, ध्यान, मांग के अनुरूप क्रिया, बुद्धि, शक्ति से युक्त कर देती हैं। हमें संवेदनशील, लज्जाशील बनाती है तथा क्षमा करने हेतु तत्पर रहती हैं। इसीलिये नवरात्र पूजा में भगवती को चारों दशों दिशाओं में प्रणाम करने की परम्परा है। क्योंकि शक्ति से ही सृष्टि का सृजन है, पृथ्वी के चाहे जिस भूभाग पर जीवित प्राणी मौजूद हों उनका उद्गम उनकी माँ से ही है यानी शक्ति के अंश रूप जो लौकिक संसार में दृश्यमान है। फिर उस अलौकिक शक्ति के प्रभाव का क्या कहना, जो पूरे जगत में प्राणेश्वरी, अघोरेश्वरी, सर्वेश्वरी के विभिन्न रूपों में विराजमान होकर मनुष्य के भाग्य को संवारने हेतु उद्यत है।

परमपूज्य भगवान् अवधूत राम की वाणी के अनुसार ''हे भगवती! मैं इस जीवन में आपसे कोई चीज नहीं माँगता। हमको इतना पूर्ण कर दें कि हमें किसी तरह का अभाव ही न रहे और यदि हममें अभाव नहीं हो जाता तो हम आपसे याचना ही नहीं करेंगे।''

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

समय

का अनुदान समझते हुए पहल करनी चाहिए, जिससे हमें पश्चाताप की अग्नि के संताप झेलना नहीं पड़ेगा। यदि कभी भूल से समय नष्ट भी हो गया तो अगले क्षण पश्चाताप कर पुनरावृत्ति न करने का संकल्प लेकर पुनः समय के आलिंगन को सचेष्ट होना पड़ेगा। अतः योजना बनाकर आलस्य, प्रमाद रहित होकर किये गये प्रयत्न यानी समय का सच्चा, सार्थक सदुपयोग कभी व्यर्थ नहीं जाता क्योंकि जो अपने अतीत से अनुभव लेते हुए मात्र वर्तमान का भरपूर सदुपयोग करता रहेगा, आज के काल में जीता रहेगा। उसका भविष्य स्वर्णिम आभाओं से सदैव युक्त रहता है। परन्तु जो मात्र दिन में सुखद स्वप्न देखते रहते है उसके अनुकूल वर्तमान समय को अपने अनुरूप कर्म में नहीं ढालते, उनके स्वप्न मात्र शेखचिल्ली सरीखा ही सिद्ध होता है। अस्तु, जीवन में अप्रत्याशित सूर्योदय के लिये, नवजागरण के लिए, नवजीवन के लिये एकमात्र विकल्प समक्ष आते हुए अवसर या समय को पहचान कर उसे आत्मसात हेतु अथक प्रयास करते रहना पड़ेगा। समय एक ऐसी कसौटी है जिस पर खरे उतारे बिना किसी को भी नहीं छोड़ा जाता, कहा जाता है कि बादशाह अकबर के जिज्ञासा पर विचारक बीरबल ने कहा कि अच्छे व बुरे दोनों में यह सद्वाक्य कहा जा सकता है ''यह समय भी बीत जायेगा'' यानी यदि समय विपरीत भी है तो भी उसकी चुनौती को मन से स्वीकार कर कर्मफल में संदेह करने से गुरेज करना ही श्रेयस्कर होता है। जैसा कि संत रहीम कवि कहते हैं—

रहिमन चुप हैं बैठिये देख दिनन को फेर।
जब निके दिन आइहैं बनत न लगिहैं बेर।।

इसी प्रकार कर्म करते हुए धैर्य धारण कर निश्चिन्त रहना चाहिए तथा बार-बार की असफलताओं से भी घबराना नहीं चाहिए। संत कहते हैं कि **''धीरे धीरे रे मना**

शेष पृष्ठ तीन पर

चैत्र नवरात्र प्रारम्भ

08 अप्रैल 2016	शुक्रवार	प्रथमा	दिन में 2.24 मिनट तक
09 अप्रैल 2016	शनिवार	द्वितीया	11.58 मिनट तक
10 अप्रैल 2016	रविवार	तृतीया	9.38 मिनट
11 अप्रैल 2016	सोमवार	चतुर्थी/पंचमी	प्रातः 7.29 तक/रात्रि 5.35 तक पंचमी
12 अप्रैल 2016	मंगलवार	षष्ठी	देर रात्रि 3.59
13 अप्रैल 2016	बुधवार	सप्तमी	देर रात्रि 2.46 मिनट तक
14 अप्रैल 2016	गुरुवार	अष्टमी	देर रात्रि 1.58 मिनट तक
15 अप्रैल 2016	शुक्रवार	नवमी	देर रात्रि 1.38 मिनट तक
16 अप्रैल 2016	शनिवार	दशमी	देर रात्रि 1.52 मिनट तक

(घट स्थापना 11.50 से 12.23 बजे तक)

(महानिशा पूजन 14.04.2016 गुरुवार रात्रि को मनाया जायेगा।)

पालनीय नियम

1. शील (ब्रह्मचर्य इन्द्रिय निग्रह) धर्म का पालन करें।
2. मौन (सन्तोष) रहें।
3. जमीन पर सोयें, अपने आसन पर न तो दूसरों को बैठनें दें न तो सोने दें तथा दूसरे के आसन पर आप भी न बैठें।
4. तप से तामस वृत्ति की समाप्ति का प्रयास करें।
5. अल्पाहार (24 घण्टे में एक बार नियमित रूप से) करें।
6. इष्ट देवता का जाप करें।
7. इष्ट देवता का पाठ करें।
8. इष्ट देवता का ध्यान करें।
9. संकल्प विकल्प रहित चित्त से रहें।
10. अपने शरीर एवं वाणी से कोई भी अपराध न करें।
11. किसी भी दिशा में इष्टदेव की अनुभूति कर साष्टांग करें।
12. माता, पिता, गुरु, तथा सज्जनों से नम्र व्यवहार करें।

तत्पश्चात् इन सभी क्रियाओं के फल को श्रीगुरु चरणों में अर्पित करें एवं जो फल प्राप्त हो, उसे इष्टदेवता को अर्पित करें। सदैव की भाँति अनुष्ठान् कलश स्थापना एवं अखण्ड दीप प्रज्ज्वलित करें।

शेष पृष्ठ तीन पर

समय

द्वितीय पृष्ठ का शेष

धीरे सब कुछ होय। माली सींचै सौ बड़ा ऋतु आवै फल होय।''

यानी उचित अवसर की प्रतीक्षा अपने तैयारी के साथ निरन्तर करते रहने में फल सुनिश्चित होता है। सनातनधर्मियों में जैसे विवाह-शादी, विशेष पूजा पाठ के लिये माह, मुहूर्त एवं नवरात्र जैसे अवसर की प्रतीक्षा कर उस विशेष अवसर पर ही विशेष कार्य को क्रियान्वित किये जाने का विधान है उसी प्रकार जीवन में हर क्षण हमारे लिये अलग अलग तरीकों से एक विशिष्ट अवसर लिये प्रस्तुत होता है, बस आवश्यकता है उसके महत्व को पहचान कर तदनुसार कार्यवाही करते रहने की जिससे आवश्यकतानुसार हम अपने शारीरिक, मानसिक पराक्रम को बढ़ाकर उसका उपाय कर उसे अपना बनाने के लिये सर्वसमर्थता का उद्योग करें। अपनी भूलों के लिये निराकार भाव से पश्चाताप करें, जिसके उसका प्रायश्चित हो सके, धर्म ग्रन्थों में कहा गया है कि **''पश्चातप: पापक्रतां पापानां निराकृति: परां सर्वेषाम् वर्णितं सिद्धि: सर्व पाप विशोधनम्।।** कहने का तात्पर्य यह है कि यदि अतीत ये हमारे द्वारा कुछ ऐसा हो गया है जिससे गड्ढा बन गया हो जो भविष्य के लिये अवरोध का कार्य कर रहा हो तो उसे पाटने का इलाज वर्तमान के कर्त्तव्यों में भी निहित है। बशर्ते कि हमारे अन्दर लोभ, लालच, वासना, तृष्णा, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का स्थान न रहे, वरना पारस पत्थर के पाने पर भी हम टनों लोहा जुटाने में अपने जीवन की ही इतिश्री कर लेते हैं और अन्तता हाथ मलते रह जाते हैं। सुअवसर हाथ में आकर भी निकल जाता है। समय को अपने अनुरूप ढालने में यदि हमें प्रसन्नता महसूस हो रही हो, ऊर्जान्वित वातावरण का सृजन अपने अन्तरात्मा में हो रहा हो तो यह लक्षण प्रदर्शित कर रहा है कि हम रुचि लेकर समय का सदुपयोग कर रहे हैं। पूरे मन से मनोयोग से अपने कार्य की पूर्ति एवं आने वाले हर अवरोध की निवृत्ति के लिये प्रस्तुत रहना पड़ेगा। इसके लिये हमें कुछ श्रमसाध्य प्रयत्न भी करने पड़ेगे, क्योंकि हर कार्य में हमारी मानसिक दक्षता, शारीरिक शक्ति मन:स्थिति का योगदान रहता है। समय ऐसे क्षण-क्षण बीतता है कि हमें जरा सा भी भान नहीं होता। तभी किसी मनीषी ने कहा है कि-

बहुत गयी थोड़ी रही नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही निसिदिन आयु खेत।।
बहुत गयी थोड़ी बची, थोड़ी भी अब जाय।
नटवर ऐसा नाचिये, ताल भंग न खाय।।

समय के सार्थक सदुपयोग का अर्थ है अपने मनसा, वाचा, कर्मणा से अवसर को अंगीकार किया जाय। यदि आधे अधूरे बुझे, आधकचरे ज्ञान के आधार पर हम संदेहास्पद वातावरण में अपनी मंजिल की ओर बढ़ते हैं तो हम अपने आपके साथ ही धोखा करते हैं। प्रतिकूल वातावरण में भी यदि संवरण रखकर धैर्य से हम निरन्तर प्रयासरत रहे तो वहीं से अनुकूलता का सृजन हो जाता है परन्तु यदि हम प्रतिकूलता से समझौता कर लेते हैं तो हमारा मन धीरे-धीरे उसका अभ्यस्त हो जाता है। एक तरह से नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हमारे मन मस्तिष्क को प्रभावित करने लगता है और हम प्रतिकूलता के कैद में रहने को विवश हो जाते है, जबकि उद्यमी व्यक्ति अपने लगातार प्रयासों से इस नकारात्मकता के घेरे को तोड़कर स्वच्छ, स्वीकार्य सकारात्मकता में प्रविष्ट कर अपने मानव जीवन के शेष अवधि को धन्य बना लेता है। हम सब भलीभाँति अवगत हैं कि अघोर विद्यालय समाज के कमजोर, शारीरिक, आर्थिक अथवा अघोर पथ, शोषित, पीड़ित वर्ग के लिये कल्पवृक्ष के समान है। समाज के थके हारे, निराश व्यक्तियों के लिये इस कल्पवृक्ष के छाये में नवीन आशा का संचार होता है, समाज के चाहे जिस वर्ग, जाति, मजहबी वर्ण से वो हो, उन्हें अपने जीवन में चमत्कार का ही अहसास होता रहता है। उनकी निराशा आशा में बदल जाती है। उनमें आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है। सदा सर्वदा के लिये उनके जीवन में यथानुकूल रूपान्तरण देखते देखते ही अल्प समय में आ जाता है। यद्यपि उस व्यक्ति या परिवार को इसका भान भी नहीं रहता, जैसे कोई यात्री रात्रि में अपने बर्थ पर सोते हुए भी हजारों किलोमीटर की सुदूर दूरी तय कर लेता है, उसी प्रकार यदि हम पूर्ण आस्था से विश्वास के साथ अघोरेश्वर के वचनों, वाणियों में अटूट श्रद्धा रखकर पूरे तहे दिल से हृदयांगम करते हैं तो कोई कारण नहीं कि हमें अपनी वह मंजिल न प्राप्त हो जिसके हम अधिकारी हैं। यद्यपि यह आसान नहीं है कहा जाता है कि अघोर का अर्थ सहज, सरल होने से होता है। परन्तु वास्तव में सरल बनना, सहजता बनाये रखना ही अपने आप में बड़ी कठिन होती है, इसीलिये बिरले ही इस शहद का स्वाद चख पाते हैं यानी अपने को अघोरेश्वर के बताये हुए मार्ग पर चलने को उद्यत रखते हैं। प्राय: अधिकांश मनुष्य अपने स्थिति में परिवर्तन से घबराते हैं परन्तु यदि कोई बीज सुसुप्तावस्था में ही पड़ा रहे, उसमें अंकुरण न हो तो कैसे वट वृक्ष या अन्य फल, फूल का उत्पादन होगा? सृष्टि की मनोहरता कैसे कायम रहेगी? इसी प्रकार हम जब तक अपने जीवन के शेष बचे समय को श्रद्धावनत विनीत होकर अघोर दर्शन के अनुपालन में खर्च नहीं करेंगे तो अनगढ पत्थर की ही भांति पड़े पड़े क्षण प्रतिक्षण घंटा, दिन रात होते होते वर्षों बीत जायेगा तथा अन्त में ''अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत'' का अफसोस होगा। अत: अपने इष्टदेव को याद रखकर उनके न्याय पर भरोसा करके, श्रीचरणों को हृदय में धारण कर इस मृत्युलोक के भवसागर में सतत तैरने हेतु तत्पर रहा जाय तो बड़े आसानी से बिना थके, हम इस दुर्गम जीवन के भवसागर को पार कर लेते एवं अपने भाग्य के बंद दरवाजे को स्वयं खोलकर अपने आत्मविश्वास के साथ औघड़ समीर के शुद्ध वातावरण में दिन प्रतिदिन अपने को तरोजाता बनाकर नई यात्रा का शुभारम्भ करते रहेंगे। यह भी तथ्य है कि मानव जीवन में कठिनाईयाँ हमारे व्यक्तित्व को पोख्ता करने के लिये, जीवन रूपी कच्चे ईट को पकाने हेतु आया करती है। अस्तु, उनका स्वागत हर स्थिति परिस्थिति में निर्भयता से, वीरता से किया जाना चाहिए, तभी हम अघोर सागर के बलिष्ठ प्राणियों में अपनी गणना सिद्ध कर पायेंगे अन्यथा आते हुए क्षण प्रतिक्षण के अवसर को यदि हिम्मत, साहस, पुरुषार्थ के अभाव में दूर से ही कष्ट की अनुभूति कर उससे वंचित होने का प्रयास करते हैं, तो सदा सर्वदा के लिये एक हाथ आया अवसर हमें धता बताकर चला जाता है।

अघोर वचन शास्त्र के ''समय'' शीर्षक अध्याय में परम पूज्य भगवान् अवधूत राम जी द्वारा भी मानव जीवन की उपमा समय की तीनों अवस्थाओं सुबह, दोपहर एवं शाम से ही की गयी है। जैसे इन तीनों कालों का महत्व है अपनी विशिष्टता है, प्रत्येक काल अपने में पूर्ण है, उसी प्रकार मनुष्य के बचपन, जवानी एवं वृद्धावस्था की अपनी विशेषतायें हैं। इन सभी अवस्थाओं में समय उभयनिष्ठ है, वह सदा अपनी गति से गतिमान, चलायमान है, बस आवश्यकता है, हमें उसे पहचान कर अवसर की तलाश करते रहने की तथा पल-पल सावधान सतर्क रहकर इस बीतते अमूल्य हीरा के क्षणों को संजोकर स्थायी आभूषण बना लेने की।

रात गवाई सोयकर दिवस गवाया खाय।
हीरा जन्म अमोल का कौड़ी बदले जाय।।

समय के माध्यम से हम अपनी नियमित दिनचर्या बनाकर, समयबद्ध कार्यक्रम अपनाकर, अपने इन्द्रियों पर नियंत्रण कर अपने को विजेता घोषित कर सकते हैं, इसके विपरीत खान-पान, सोना, अनियमित दिनचर्या न केवल हमारे जीवन तत्त्व को धूमिल कर देती है बल्कि यह सांकेतिक है कि सफल लोगों की भाँति हमने अपने जीवन में समय के सदुपयोग के महत्व को नहीं समझा।

अस्तु, अब भी समय है, अघोर वाणी कहती हैं कि ''जबसे बूझे तब से सूझे'' यानी ''बीती ताही बिसारि दे आगे की सुधि लेहूँ'' सार संक्षेप यही है कि समय की महत्ता को हम अपने जीवन में स्थान दें तथा एक नियमित दिनचर्या का पालन करते हुए, अपने सुधार के साथ अपने परिजनों, सुधिजनों एवं समाज के अन्य सदस्यों के लिए हमारा जीवन प्रेरणास्त्रोत बनें, जिससे हम इस संसार को अघोर तरंगों की सहायता से निर्भीक निर्विघ्न पार कर सके।

परमपूज्य अघोरेश्वर के अनुसार ''जब हम अपने खाली समय का सदुपयोग करेंगे तो हमारा खालीपन जाता रहेगा और हमारे बीच का सुख का जो जीवन है उसे जीने के लिये बहुत आनन्द देगा। बहुत सुख देगा और उस समय अपना मन इतना प्रसन्न होगा कि हम अंदाजा नहीं लगा सकते है। सद्मार्ग पर रखा गया एक-एक पग करोड़ों यज्ञ के समान कहा गया है।''

विश्वास की शक्ति

सुधर्मा! राई भर भी विश्वास हमारी वाणियों में तुम्हारे में हो जाय, तो पहाड़ को कह सकोगे कि सरक कर यहाँ से वहाँ चला जाय, वहाँ से यहाँ चला आये तो तुम्हारे लिये अनहोनी न होगी। जो मस्जिदों, गिरजाघरों को कर देने सरीखे बहुत से लोग दीखते हैं, उनका इनसे कैसे उद्धार होगा। इसके लिए सुधर्मा सोचना चाहिए।

बीज मंत्र राई समान जानो (यानी छोटा)। पीपल के बीज को देखा है? यदि गहरी माटी हो, पथरीली न हो और जंगल-झाड़ न हो, उसमें उगने वाला पीपल वृक्ष बहुत विस्तार वाला होता है, बहुत ऊँचे मस्तक वाला होता है। आकाश में रहने वाले पक्षी का वह विश्रामस्थल होता है (यानी देवता का)।

जिसका मन भूमा हृदयस्पर्शी है, वह गहराई सरीखे है। बीजमंत्र को जो राई सरीखे है, उसमें बराबर बोकर, कंटकों से, झाड़ियों से, शीत-गर्मी रूपी असुरों से, कलुषित काया-रूपी पक्षियों से बचा ले जाता है, वह वृक्ष बहुत ही व्यापक और ऊँचे मस्तक वाला होता है। सुधर्मा, ऐसा ही मन्त्र का प्रभाव होता है। आकाश में उड़ने वाला देवता उस पर विश्राम करता है।

खतरनाक श्वेत

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

मुड़िया साधुओं!

एक कथा का अल्पांश मुझे स्मरण हो रहा है। मुड़िया साधु! बकुले श्वेत रंग के होते हैं। वे आज के श्वेत वस्त्रधारी कहे जाने वालों के द्योतक हैं। यह कहा जाता है कि जिस वृक्ष पर जिस वृक्ष की डाल पर बकुले बैठने लगते हैं। वह वृक्ष, वह डाल सदैव के लिए दूषित हो जाती है। मलीनता से भर जाती है, सड़ जाती है, टूट कर गिर जाती है। ये बकुले नदी, नालाओं के किनारे बहुत ध्यान से बैठकर साधुओं का रूप बनाकर जल प्राणियों की हत्या करते हैं। तू देख ही रहे हो, इन श्वेत पर वाले बकुलों का आगमन अंचल से लेकर जिला तक, जिला से लेकर प्रान्त तक, प्रान्त से लेकर देश तक। नदी-नालों के किनारे यानि अंचलों एवं जिलों में प्रसन्नचित्त, खेलने-कूदने एवं हँसने वाले उदार चरित्र वाले आगे भी उनके शिकार होते हैं। प्रान्त से लेकर देश तक उनके शिकार होते हैं, हो रहे हैं। जिस वृक्ष पर जिस वृक्ष की जिस डाल पर, इनका बाहुल्य होता है, वह समूल नष्ट हो जाता है।''

साधु-मड़िया शिष्य ने कहा-'हाँ सरकार बाबा! मैंने अपने गाँव में भी देखा है और वयोवृद्ध लोगों से भी सुना है जिन डालों पर बकुलों का आवागमन, बैठना-उठना होता है, वे समूल विनष्ट हो जाते हैं।''

''ठीक कहते हो, मुड़िया साधु! हमारे व्यवहार के कारण, आदिवासी क्षेत्र में, भोले-भोले, स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शी हृदयवाले, श्यामला रंग और वर्ण के वनवासी रूपी दरिया के मध्य पाश्चात्य जगत के श्वेत वर्ण और चर्मवाले आगन्तुक बकुल दिखलाई देते हैं। हिन्दी राष्ट्रभाषा और पाश्चात्य संस्कृति हमारे देश में अत्यधिक सुहावनी और रूचिकर लगती है। देखने में तो ये श्वेत-धवल बकुले साधु जान पड़ते हैं, किन्तु राष्ट्र और भारतीय समाज के हित में ये खतरनाक साबित होते जा रहे है। मुड़िया साधु! इसी कारण हम अपने पूरे राष्ट्र को एक में नहीं समा पा रहे हैं, एक नहीं देख पा रहे हैं। हम अपने आपसे अंगुली से ताने वाली हमारी संस्कृति और राष्ट्रीयता को सही रूप में नहीं समझने देने और उनसे अनभिज्ञ बनाये रखने में, पाश्चात्य जगत के इन श्वेत त्वचा वालों तथा उनकी भाषा और संस्कृति का प्रमुख एवं सशक्त हाथ है। वैसे देखा जाय तो अन्तर्राष्ट्रीय जगत में इनका कोई विशेष महत्व नहीं है। प्राय: अधिकांश स्वतंत्र देशों में उनकी अपनी अपनी राष्ट्रीय भाषाओं और संस्कृति का ही प्राबल्य है। आंग्ल भाषा और पाश्चात्य संस्कृत का प्रभाव तो सिर्फ उन थोड़े से नगण्य क्षेत्रों तक ही सीमित है जहाँ कुछ काल पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य का प्रभुत्व कुछ समय तक रहा था। यह हमारा दुर्भाग्य है कि अभी भी हम इस भाषा और संस्कृति तथा इनके पोषकों से मोहाविष्ट हो अपने आपको अपनी धरोहर से अपरिचित एवं वंचित रखे हुए हैं और उसके दुष्परिणाम भुगत रहे हैं।

मुड़िया साधु! तू भी मेरे जैसे वृक्ष की डाल है। कम्पित हो जाते होंगे, स्तम्भित हो जाते होंगे उनकी मलीनता से। देखों, मुड़िया साधु! जिस मनुष्य ने अल्पायु पायी है किन्तु उसकी इन्द्रियाँ निगृहीत हैं, वह दस प्रकार के शील का पालन करने वाला है। चोरी, परनारी, मिथ्या इत्यादि दुष्कृत्यों से मुक्त है। दूसरों के अपमान, घृणा, ईर्ष्या से विरत है। वह स्वर्गीय देवताओं के सदृश है। जिसने दीर्घायु पायी है किन्तु, जो दु:शील है, वह नरक का कीड़ा है, ढोला है। ऐसा मनुष्य त्याज्य है। वह विस्मरणीय है।

अच्छा तो मुड़िया साधु! अब जा! जिसका काल और समय समझते हो, उस कार्य को सम्पन्न करो। मैं भी जा रहा हूँ वह कार्य करने, जिसके लिए काल और समय मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

गृहणी के कर्त्तव्य

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

मुड़िया साधुओं!

सुधर्मा! मैं एक समय सर्वेश्वरी मंडप में विवाह महोत्सव की संध्या बेला में मंगल सूत्र में बँधने वाली कुमारियों को सम्बोधित कर रहा था। मैंने कहा, कुमारियों! ऐसा करना चाहिए- पति के गृह में जाकर जो भी गौरव भाजन हों, चाहे वह माता हो, चाहे वह पिता हो, चाहे वह अघोरेश्वर सन्त महात्मा हों, सत्कार करें, उनका गौरव करें, उनकी प्रतिष्ठा करें, उन्हें पूजें तथा अतिथि के आने पर आसन, जल दें। इसलिए कुमारियों को इस प्रकार सीखना चाहिये कि स्वामी के हर कार्य को सम्पन्न कर सकें, चाहे घर का भोजन बनाना हो, बर्तन मांजना हो, सिलाई कढ़ाई करनी हो, घर को लीपना पोतना हो, सँवारना हो। ऐसा होने पर वे आलस्य रहित और दक्ष होंगी। वे यथोचित्त उपाय तथा विचार करने में उसकी व्यवस्था करने में समर्थ होंगी। यही सीखना चाहिये।

इसलिये कुमारियों! इस प्रकार सीखना चाहिये कि स्वामी के घर के भीतर जो जन होंगे—चाहे दास हों, चाहे लौड़ी हो, चाहे नौकर हो उनके द्वारा किये गये तथा न किये गये कामों की जानकारी रख सके। परिवार में, घर में, कोई रोगी हो तो उसके बलाबल की जानकारी रखे और उसके पथ्य की व्यवस्था, उचित मात्रा में, समय से कर सके। स्वामी का जो भी धन-धान्य, चाँदी हो अथवा सोना, उसकी सुरक्षा कर सके। उसके प्रति धूर्त नहीं हों, उसे चुराने वाली नहीं हों, उसको गलत कार्यों में खर्च करने वाली नहीं हों, नष्ट करने वाली नहीं हों, नष्ट होने से बचाने वाली हों—यह अवश्य सीखना चाहिये।

ऐसा करने वाली विवाहित स्त्रियों को सद्गति प्राप्त होती है, लम्बी आयु प्राप्त होती है, सुख और शान्ति के भंडार उसे मिल जाते हैं। अच्छे कुल में जन्म होता है, अच्छे देश में जन्म होता है, सज्जनों के घर जन्म होता है। तुम जिस घर में रहोगी वह देवता के घर की तरह, सन्त पुरुषों के आश्रम की तरह अलौकिक होगा। सुधर्मा, ऐसा उपदेश कुमारियों को देना चाहिये।

स्पन्दनरहित अनुभव

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

पिछले अंक का शेष

मुड़िया साधुओं!

मुड़िया साधुओं! तुम सहज रूप से सर्वत्र देख रहे हो, क्लेश, जलन और दु:ख-वेदना की अग्नि कितना दाह उत्पन्न करती है। किस प्रकार जलाने लगती है। कोई ऐसा घर नहीं है जहाँ क्रन्दन न हुआ, न होने वाला हो। 'और घर' औघड़ ही मात्र वह घर है, जो बड़े से बड़े धनवान, ऐश्वर्यवान और देहाभिमानी मनुष्यों को वृत्त में, सम आसन (श्मशान) औघड़ दीखता है। तुम हमारे समक्ष भस्मीभूत होकर जो खड़े हो, इससे तुमने क्या समझा है? सच तो यह है, जो भी प्राणी जन्म धारण करता है, चाहे वह मनुष्य हो, जड़ हो, चेतन हो, पिण्डज हो, ऊष्मज हो, उसका जन्म ही उसकी मृत्यु निर्धारित और सुनिश्चित कर देता है। उसकी सूरत और स्वभाव दिनानुदिन, क्षण-प्रतिक्षण, विलीन होता जाता है। जो विनष्ट हो जाता है, वह फिर लौट कर नहीं आयेगा। आपके, हमारे और सभी के सम्बन्ध में समान रूप से ऐसी ही होता हुआ प्रत्यक्ष दीखता है। ऐसी अवस्था में, अपने ऊपर आश्रित न होकर किसी अन्य के समक्ष परायणता स्वीकार करना पागलपन ही है। 'सर्वजन हिताया सर्वजन सुखाय' जो उत्तम और समान व्यवहार है, उसे आत्मसात करना सर्वश्रेष्ठ मानव कर्त्तव्य है। शब्दों में तो यही कहा जायेगा, क्योंकि इसकी पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए शब्द बने ही नहीं। हाँ, यह सही है कि अनुमान-ज्ञान द्वारा कोई कोई महापुरुष इसकी पूर्णानुभूति करते हैं। उसे कहने की मैं आवश्यकता भी नहीं समझता हूँ। सीमा का अतिक्रमण करना दु:खदायी है। ईश्वर प्रदत्त जो अपना अधिकार जताया गया है, उसे न्यूनाधिक करने से दु:ख का भय है। अपने को इस स्थिति में रखना क्या आप पसंद करेंगे? कभी नहीं। यदि आप ऐसा करते तो घर नहीं छोड़ते। हम दिग्भ्रमित होकर मारे-मारे, अपरिचित मार्गों पर चलकर अपना स्वधर्म स्वाहा नहीं करते।

अच्छा तो मुड़िया साधुओं! अब तुम लोग जाओ। जिसका काल और समय समझते हो, उस कार्य को करो। मैं भी जिसका काल और समय समझता हूँ, वह कार्य करूँगा।''

अघोर सूत्र

☞ **यदि झूठ बोलेंगे तो भयाक्रान्त होंगे, हृदय कम्पित होगा और मन-मस्तिष्क मलीन रहेगा। विपदाएं घेर लेंगी और विक्षिप्त हो जायेंगे।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी